प्रातः क्लास 10-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

****

(आज सबेरे 3बजे से 4 बजे तक सभी योग में बैठे थे) ओमशान्ति। बच्चे सबेरे उठ कर क्या करते थे। बाप को याद करते थे और चक्र को भी याद करते थे। बस ना। और ते कोई बड़ी बात नहीं। कोई पहाड़ फोरने वा समुद्र को पार करने आद की तो बात ही नहीं। अपन को आत्मा तो समझना ही होता है। बाप भी कहते हैं अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करते रहो। तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। अभी तुम तमोप्रधान बने हो फिर सतोप्रधान बनना है अभी तुम कलियुग में हो न कि सतयुग में। सतयुग में सतोप्रधान और कलियुग में तमोप्रधान। अभी यह तो कामन बात है। हां समझाने में थोड़ा टाईम लगता है। इसमें मुंझने वा हार्ट-फेल होने की कोई डरकार नहीं। सारे विश्व का मालिक बनना है। तो जरूर कुछ तो मेहनत होगी ही। स्थूल कोई मेहनत नहीं है। इसमें सूक्ष्म मेहनत होती है। बाप ऐसे भी नहीं कहते हैं कि बैठ कर मुझे याद करो। यह तो सीधी2 बात है। बच्चे तुम समझते हो हम आत्मा सतोप्रधान थी अभी तमोप्रधान बने हैं। अभी सतोप्रधान बनने का सिवाय याद की और कोई उपाय नहीं। याद से ही आयु बड़ी होती है। पाप खत्म हो जाते हैं। सतयुग में दुःख आद की बात ही नहीं। क्योंकि पवित्र आत्माएं हैं। तुम पवित्र सतोप्रधान बन जाते हो। कितनी सहज ते सहज बात है। बाप को याद करना है और सतोप्रधान बनना है। जाना भी है जरूर। यहां तो रहने का नहीं है। जिन्हों के पास बहुत कारखाने आद हैं उन्हों की इतनी दिल नहीं लगेगी। माया खेंचती रहेगी। बाप तो है ही गरीब निवाज़। ग़रीबों को ही शाहुकार बनाना है। ग़रीबों का बुधि योग इतना नहीं जावेगा। वह सहज ही समझ जाते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है, पवित्र भी बनना है। पवित्र बनते2 फिर अपवित्र न बनना चाहिए। बाप यह भी समझाते हैं पवित्रता के लिए बिघ्न पड़ेंगे, अबलाओं पर अत्याचार होंगे। नाम ही है दूर्योधन। दुश्शासन। यह है ही गीता का एपीसुड। बाप कहते हैं यह भक्तिमार्ग की पुस्तक आद रांग बनी हुई है। कृष्ण भगवानुवाच ही गलत हो गया। सिर्फ दो अक्षर कंसट है। मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। जिसके लिए ही तुम सबेरे में बैठे थे। यह निश्चय रखना चाहिए बाप को याद करने से हम तमो से रजो, रजोसे सतो, फिर सतोप्रधान बनते जावेंगे। और कोई उपाय नहीं। और कोई ऐसी पढ़ाई नहीं पढ़ा न सके। बाप ही बैठ समझाते हैं। यह ज्ञान की समझानी भी अभी तुमको मिलती है। फिर तो ज्ञान की दरकार ही नहीं रहती। यह ज्ञान एक के पास नहीं है। फिर बच्चों को देते हैं। बस फिर वापस चले जाते हैं। वर्सा पा लिया ज्ञान पूरा हुआ। अभी इसमें डिफीकल्ट क्या है। सिर्फ माया के तूफान बिघ्न डालते हैं। कहते हैं बाबा हम आप को याद करते हैं बीच मे अनेक प्रकार के माया के तूफान आते हैं। संकल्प और विकल्प कहा जाता है। इस समय रावण राज्य में तुम्हारा जो भी संकल्प होता है वह विकल्प हो जाते हैं। वहां तुम्हारे संकल्प विकल्प नहीं बनते। तुम ऐसा कोई काम नहीं करते हो जिस से किसको दुःख हो। सतोप्रधान किसको दुःख थोड़े ही देंगे। वहां तो एक ही धर्म है। मनुष्य पीस2 मांगते रहते हैं। परन्तु बाप ने समझाया है शान्ति का सागर तो एक ही बाप है। उनको ही सभी कहते हैं शान्ति देवा.. बाकी तो कोई कर न सके। शान्ति का सागर एक ही शान्ति देंगे। वह सभी का सागर है। बाप बच्चों को थोड़ी ही बात समझाते हैं। इसमें जरा भी मुंझने की बात नहीं है। बाप कहते हैं पहले2 तो बाप का परिचय दो। बाप को कोई भी जानते नहीं। बाप है एक। बाकी सभी ब्रदर्स हैं। बाप से वर्सा जरूर मिलता है। अभी तुम जानते हो हम संगम युग पर बैठे हैं। और बाकी सभी आयरन एज कलियुग में हैं। तुम जानते हो सतयुग में सुख और शांति है। शान्तिधाम में भी शान्ति है। चित्र तो क्लीयर है। बाबा ने पर्चे जो छपवाई है वह भी हाथ में हो। पूछना है तुम पतितनर्कवासी हो या पावन स्वर्गवासी हो? बाप ने तो स्वर्ग में भेजा था। बाप स्थापना ही स्वर्ग की करते हैं। सतयुग में मनुष्य सुखी हैं। बाकी सभी शान्तिधाम में हैं। इन बातों को समझेंगे वही जो स्वर्ग के होंगे। कोई झट समझ लेंगे। कोई को समझने में देरी होगी। ऐसे भी नहीं पहले जो आते हैं, उन से

वाले पढ़ करतीखे नहीं हो सकते। नहीं। प्री है। भल कोई पिछाड़ी में भी आवे तो भी पहले वालों से तीखे चले जावेंगे। बाप तो सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। आत्मा जो प्युर बनी है वही फिर इम्प्युर बनी है। फिर प्युर बन मुक्ति-जीवनमुक्ति में चले जावेंगे। इसमें मुंझने की भी कोई बात नहीं। इस पढ़ाई से तुम कितना ऊंच मर्तबा पाते हो। और पढ़ाने वाला है एक टीचर। तुम हो नाईब टीचर्स। यह है रूहानी स्कूल। तुम देखते हो पुराने से नये तीखे2 चले जाते हैं। समझाने का तो सिर्फ यही है। बाप ने कहा है यह ज्ञान सभी धर्म वालों लिए है। मनुष्य मात्र के लिए है। सिर्फ कहना है तुम तो आत्मा हो ना। आत्मायें सभी एक बाप के सन्तान हैं। शान्तिधाम से आत्मायें यहां आती हैं। पार्ट बजाने लिए। वह मुक्ति धाम वह है जीवनमुक्ति धाम। मुक्ति में सिर्फ आत्मायें ही रहती हैं। जीवनमुक्ति में शरीर धारण कर पार्ट बजाना होता है। कितना सहज है। अल्फ और बे पढ़ाया जाता है। पहले2 बाप कहते हैं मुझ अल्फ का परिचय दो। तो फिर सहज समझते जावेंगे।

इन में हम प्रश्न कैसे कर सकते हैं बाबा यह क्यों नहीं। ऐसे क्यों नहीं। बाबा से तुम क्या पूछते हो। बाप की तो आज्ञा माननी चाहिए ना। तुम पावन थे पतित बने फिर पावन बनना है। बाप आत्माओं से ही बात करते हैं। ऐसा कोई सन्यासी उदासी नहीं जो ऐसे कहे कि तुम आत्मायें सभी भाई2 हो। बाप एक ही है। लौकिक बाप से हद का वर्सा, पारलौकिक बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। सन्यासी निवृति मार्ग वाले कह न सकें। वह तो कहते सुख है ही काग बिष्टा समान। उन्हों का धर्म ही अलग है। कितनी माईयां आद भी जाकर उन्हों के फालोअर्स बनती हैं। यह तो आते ही बाद में हैं। शुरू में तो हैं आदी सनातन देवी देवता धर्म वाले। उनकी शिक्षा बाप ही देते हैं और कोई दे न सके। वास्तव में उनको तीर्थ यात्रा करने, पुस्तक आद पढ़ने का भी हुकुम नहीं है। दरकार ही नहीं रहती। जैसे वह हद के सन्यासी हैं वैसे तुम भी बेहद के सन्यासी हो। तुमको भी हुकुम नहीं। बाप कहते हैं सिर्फ मामेकं याद करो। वह हठयोगी सन्यासी कहते हैं ब्रहम में लीन होना है। वह अपने को तत्व ज्ञानी ब्रहमज्ञानी कहलाते हैं। तुमको तो बाप ज्ञान देते हैं। ब्रहम वा तत्वथोड़े ही ज्ञान देंगे। उनको ज्ञान सागर कहेंगे क्या। तो बाप समझाते हैं वह धर्म बिलकुल अलग है। उन्हों का फालोअर बनना तो अन्धश्रधा ब्लाईन्ड फेथ है। बाप जब आते हैं तब स्वर्ग का वर्सा मिलता है। बाप बैठ अपना परिचय देते हैं। तुम आपस में भाई2 हो। तुम्हारा यह बाप है। बाप कहते हैं मैं कल्प2 आता हूं। साधारण तन में बैठ तुमको अपना परिचय देता हूं। रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ समझाता हूं जिस से तुम स्वदर्शनचक्रधारी बनते हो। परन्तु यह अलंकार स्वदर्शनचक्र आद का तुम ब्राहमणों को शोभेंगे नहीं इसलिए विष्णु को दिखाया है। विष्णु के अर्थ को भी कोई नहीं जानते हैं। विष्णु चतुर्भुज कौन है, उनको यह शंखचक्र आद क्यों दिया है। कुछ भी बता न सकेंगे। सवाल वह पूछते हैं जो खुद जानते हैं। न जानने वाले तो प्रश्न पूछ न सकें। कोई से भी पूछो शिव बाबा की जीवन कहानी तो सुनाओ वह कब आये थे क्या आकर किया कब बता न सकेंगे। कितनी तुमको नालेज मिलती है। बाप समझाते हैं बच्चे मामेकं याद करो तो विकर्म विनाश हो। और बातें छोड़ दो। याद से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। सभी पाप भस्म होंगे इस योग अग्नि से। योग अक्षर भी कामन है। बाप तो कहते हैं याद करो। वह लोग याद नहीं सिखलाते। वह न तो बाप को न आत्मा को जानते हैं। आत्मा सो परमात्मा कह देते हैं। फिर कहेंगे नाम रूप से न्यारा है। अच्छा नाम-रूप कुछ तो बताओ। कुछ भी नहीं। इसकी तो कोई मतलब ही नहीं। परन्तु यह सभी ड्रामा के बस है। बाप कहते हैं जो भी अपने को पूजा कराने वाले हैं यह असुर ही ठहरे। है ड्रामा। ऐसे भी नहीं कि फिर नहीं होंगे। फिर भी होंगे जरूर। इस समय की बात ही बाप समझाते हैं। इस संगम का किसको भी पता नहीं है। यह पुरूषोत्तम संगम युग है। और दिल से लगता है हम श्रीमत से इतना श्रेष्ठ बनते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। कहां शिव बाबा पुनर्जन्म रहित, कहां श्रीकृष्ण 84 जन्म लेने

वाला। जस नम्बरवन वाला ही नम्बर लास्ट में रहेगा। लास्ट और फर्स्ट दोनो सामने बैठे हैं× ब्रहमा की रात और ब्रहमा का दिन। ब्रहमासो दिन में विष्णु। फिर दिन से रात होती है तो विष्णु सो ब्रहमा बनते हैं। इन कनेक्शन को कोई जानते नहीं हैं। तुम अच्छी रीत समझते हम ब्राहमण सो देवता बनेंगे। अभी तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। वह फिर समझते हैं चक्र फिराने से गला कटते हैं। सभी को खलास कर देते हैं। कृष्ण का चित्र दिखाते हैं अकासुर, बकासुर को मारा। कितना बड़ा हिंसक बना दिया है। और फिर कहते रानियों को भगाया है, यह किया। डबल हिंसब बना दिया है। कितनी ग्लानी की है। तुम कोई की बेइज्जती कर्तव्य झट कहेंगे यह क्या करते हो। यह तो बड़ा ही पाप है। बाप कहते हैं यह भारतवासियों का ही काम है। बाप भी भारत में ही आकर समझाते हैं। तुम कितने ऊंच थे फिर गिरते2 तुम तमोप्रधान बने हो। मैं तो अपने पूरे टाईम पर आताहूं। इस ड्रामाको सिवाय तुम्हारे कोई भी नहीं जानते। बहुत ही सहज बात है। सिर्फ बाप को और वर्से को याद करना है। खाली बाप क्या करेगा। वर्सा भी याद आना चाहिए। बाप से वर्सा कैसे सहज मिलता है। मुंझने की कोई बात नहीं। बाप कहते हैं तुम जो करते हो सो बिलकुल बनो। मुंझो नहीं। बन्दर है लोग है। तुम रत्न देंगे वह रत्नों को भी पत्थर समझ फेंक देंगे। इन रत्नों को तो तुम ही जानते हो। इनकी वैलयु बहुत है। तुम्हारे पास तो वहां कारुन के खज़ाना होता है। बिचार करो हम कितना शाहुकार थे। जो बाद में मंदिर बनाया उसमें कितनामाल था। वह एक एक चीज़ लाखों रुपये का होता है। फिर भी यह सभी रिपीट होंगे ना। कईमुंझते हैं मकान तो टूट गया फिर कैसे वही बनेंगे। हीरों की खानियां फिर कैसे निकलेंगी। ऐसी2 बातों में मुंझ कर फिर आते ही नहीं। ड्रामा को समझते ही नहीं हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जागराफी रिपीट होती है ना। गाड इज़ वन। क्रियटर ईज़ वन। क्रियश्न भी वन। अनेक दुनियाएं होती नहीं। वह तो समझते हैं अनगिनत दुनियाएं हैं। फिर उन से कौन बैठ माथा मारे। तुम जानते हो दुनिया एक ही है। फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी कैसे रिपीट होती है यह सभी तुम्हारी बुधि में है। 84 का चक्र, युग भी समझाया है। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। जबबाप आकर तुमको यह बनाते हैं। तुम्हारा फोटा भी निकाला था राजयोग और भविष्य का। बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुमयह बन जावेंगे। कितनी सहज बात है। सबेरे में तुम एक घंटा बैठे। ऐसे भी नहीं कि एक घंटा हा 5मिनट भी मुश्किल याद में बैठे होंगे। अपना चार्ट बनाओ कहां2 बुधि योग भटका। फिर बुधि को लगाया। बाप ने कहा है बुधि योग भागेगा। फिर लगाओ। कोई तो भल कितना भी माथा मारे योग में रह न सकेंगे। याद करने आवेगा ही नहीं। कोई का 20 मिनट कोई का 10 मिनट लगेगा। सारा समय तो कोई का हो न सके। गपोड़ा लगाते होंगे हमारा तो योग बहुत अच्छा लगा। तो दूसरा तीसरा घंटा भी बैठ जाओ। कमाई करो। इस योग से तुम अमर पुरी के मालिक बनते हो। अमर बन जाते हो। वहां काल खाता नहीं। दुनिया में किसको भी पता नहीं किसतयुग त्रेता में अकाले मृत्यु होती नहीं। सतयुग को कोई जानते ही नहीं। तुमको भी आगे पता था क्या। अभी बाप ने ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है। रोशनी मिलती जाती है। सभी हैं अंधे। अंधे के औलाद अंधे। परन्तु अपन को अंधा को ई समझते थोड़े ही हैं। दुनिया का चक्र कैसे फिरता है कुछ भी नहीं जानते। और धर्म वाले फिर भी जानते हैं। फलाना2 टाईम पर आया। भारतवासी तो कुछ भी नहीं जानते। अभी तुम बच्चे कितना नालेज फुल बनते हो। फी ल करते हो नालेज थी तब तो देवता बने। अभी फिर नालेज मिलती है तो तुम सो देवता बनते हो। मुख्य मुख्य बात है बाप की परिचय की। विलायत में भी तुम बहुत अच्छी रीत समझा सकते हो। बाबा बिचार करते हैं इतनी सहज नालेज क्यों नहीं समझते हैं। उन्हों को समझा सकते हो जो सन्यासी लोग तुम्हारे पास आते हैं वह सहज राजयोग सिखाये नहीं सकते। वह तो एक ही गाडफादर सिखलाते हैं। मनुष्य सृष्टि का बीज

रूप है उनमें सारी नालेज है। सन्यासी दे न सके। वहराजयोग सीखा नहीं सकते। वह तो है ही निवृति मार्ग वाले। इसमें तो शारीरिक कोई कोई क्रिया नहीं। बाप कहते हैं तुम मुक्तिधाम में थे तो तुम्हारी आत्मा प्युर थी। फिर प्युर बनना है। पार्ट बजो इमप्युर बन जाते हैं। तो अपन को आत्मा समझो। आत्मा भी बहुत छोटी बिन्दी है। बाप परमात्मा भी बहुत छोटा बिन्दी है। आत्मा पवित्र बन कर भागेगी स्वीट होम। तो प्राचीन भारत का योग यह है जिस से मुक्ति जीवनमुक्ति मिलती है। बाप एक ही बार आकर यह राजयोग सिखलाते हैं। कोई फी आद भी नहीं देते। इसमें जरा भी खर्चा नहीं। सिर्फ बाप और वर्सा को याद करो। बस। घूमो फिरो। कुछ भी करो। पवित्र बनना है। अपवित्र आत्मा तो जा न सके। विकार में फंसे हुये हैं इसलिए पुकारते हैं बाबा। लबरेट करो। बाप कहते हैं तुम याद करो तो तुम्हारे पाप विनाश हो जायेंगे। आत्मा उड़ेगी। स्वर्ग में जो पहले जाने वाले हैं वही आवेंगे। तुम तो पीछे आते हो। अपना2 धर्म स्थापन करने। अभी सभी को वापस जाना है। बाप ही गाईड बन कर सभी को साथ ले जाते हैं। बहुत सहज बात है। अक्षर ही दो है। घर में भी रहो। नौकरी आद भीभल करो सिर्फ बाप को याद करो तो खाद निकल जाये। उनका ही भारत का प्राचीन राजयोग गाया जाता है। ऐसे अंग्रेजी में भी बैठ समझावे तो सभी हियर2 करेंगे। स्प्रीचुअल नालेज तो बरोबर यह है। और कोई जानते ही नहीं। यह नालेज देता ही रूह है। यह राजयोग हम बाप द्वारा सीख रहे हैं। फिर हम विश्व के मालिक बनेंगे। तो इसमें कोई भी चीज़ चित्र आद की बिलकुल दरकार नहीं। यह तो मोस्ट सिम्पुल बात है। रूहानी नालेज तो है ना। चित्रों आद की भी बात नहीं। अपन को आत्मा निश्चय करना है इसमें ही मेहनत लगती है। घड़ी-घड़ी देह अभिमान आ जाता है। उनको ही माया का तूफान कहा जाता है। तुम ज्योत जगाते हो। फिर तूफान लगने से बुझ जाते हैं। ड्रामा अनुसार राजधानी तो स्थापन होनी ही है। ऐसे कब न समझना तुम्हारी मिशन कोई फेल हो सकती है। नहीं। अविनाश ईश्वरीय मिशन कब फेल हो न सके। स्थापना तो हो ही जानी है। बाप कहते हैं इनकी आत्मा को भी तूफान लगते हैं। मेरे को तो नहीं लगेंगे। तुम बच्चों को ही तूफान लगते हैं। दुनिया में कोई को भी पता नहीं है। यह राजाई कैसे स्थापन हो रही है। जिन्हों ने कल्प पहले राज्य पाया है वह वहराजयोग सीखते रहते हैं। उसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता। तुम एक्टर्स हो। आत्मा में कितना पार्ट भरा हुआ है। वह कब विनाश नहीं हो सकता। यह है स्प्रीचुअल ड्रामा। बना बनाया। बोलो पहले बाप को पहचानो तो फिर प्रश्न पूछने की बात न रहेगी। बाप से कोई भी प्रश्न पूछने का नहीं है। बाप अपना परिचय आपे ही देते हैं कि मुझे ऐसे ही आना पड़ता है। तुम किसको कहते हो श्रीकृष्ण भी 84 जन्म लेते हैं तो बिगर पड़ते हैं। कृष्ण का चित्र तो बहुत प्रसन्द आता है फिर लिखत काट देते हैं। भक्त है ना। तुम तो अभी जानते हो वह कैसे पुनर्जन्म लेते हैं। नाम-रूप आद सभी बदल जाते हैं। राजा रानी बाकी है प्रजा। एक राजा रानी के लाखों प्रजा होती है। बिकानेर में राजा है कितना बड़ा इलाका है। करोड़ तो प्रजा होगी। वहां तो इतनी प्रजा नहीं होती। फिर भी राजा-रानी प्रजा होती है ना। नथींग न्यु। कल्प पहले भी हुआ था। दिन प्रति दिन बच्चों नई2 पाईन्टस मिलती रहती है। न सर्विस में थकना है न याद में थकना है। जितनी सर्विस करेंगे उतना ही अच्छा है। इसमें हड्डियां भी दे देनी है। सभीको पैगाम देना है। अखबार में डालो। बच्चों को बाप से वर्सा कैसे मिलता है। याद से विकर्म विनाश होते हैं। ऐसी2 बातें लिखो। बन्दरों को समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। जैसे भील लोग समझते हैं हमको तो कठियां ही करनी है। वह पढ़ाई को क्या जाने। अभी तुमको नालेज मिली है। शिव बाबा से हमको वर्सा मिलता है हम महाराजा महारानी बने थे। यह है ही नर से नारायण बनने की नालेज। नालेज से बड़ी खुशी होती है। विघ्न भी पड़ते हैं कल्प पहले भी पड़े थे। इस से पार हो पुरुषार्थ करते रहना है। यह भी सब छोड़ना। देखा हमको बाबा से डबल नाज मिलती है। छोड़ा इन गधाई को। इन पैसों का क्या करेंगे। फट से छोड़ दिया। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग। नमस्ते।